

युगों युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है लिरिक्स



युगों युगों से यही हमारी,
बनी हुई परिपाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।

इस धरती ने जन्म दिया है,
यही पुनीता माता है,
एक प्राण दो देह सरीका,
इससे अपना नाता है,
यह धरती है पार्वती माँ,
यही राष्ट्र शिव शंकर है,
दिगमंडल सापों का कुण्डल,
कण कण रुद्र भयंकर है,
यह पावन माटी ललाट की,
यह पावन माटी ललाट की,
ललीत ललाम ललाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।

इसी भूमि पुत्री के कारण,
भस्म हुई लंका सारी,
सुई नोक भर भू के पीछे,
हुआ महाभारत भारी,
पानी सा बह उठा लहु था,
पानीपत के प्रांगण में,
बिछा दिये रिपु गण के शव थे,
उसी तरायण के रण मे,
पृष्ठ बाचते इतिहासो के,
पृष्ठ बाचते इतिहासो के,
अब भी हल्दी घाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।



बंगाली क्या मद्रासी,
सिख मराठे राजपूत क्या,
बंगाली क्या मद्रासी,
इस मंत्र का जाप कर रहे,
युग युग से भारतवासी,
बुन्देले अब भी दोहराते,
यही मंत्र है झाँसी में,
देगे प्राण ना देगे माटी,
गूँज रहा है नस नस में,
शिश चढाया काट गर्दने,
शिश चढाया काट गर्दने,
या अरी गर्दन काटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।

इस धरती के कण कण पर है,
चित्र खिचा कुरबानी का,
इस धरती के कण कण पर है,
चित्र खिचा कुरबानी का,
एक एक कण छंद बोलता,
चढी शहीद जवानी का,
इसके कण है नहीं किंतु ये,
ज्वाला मुखी के शोले है,
किया किसी ने दावा इनपर,
ये दावा से डोले है,
इन्हें चाटने बढा उसी ने,
धूल धरा की चाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।

युगों युगों से यही हमारी,
बनी हुई परिपाटी है,
खून दिया है मगर नहीं दी,
कभी देश की माटी है,
युगो युगो से यही हमारी lbd।

गायक – प्रकाश माली जी।
प्रेषक – मनीष सीरवी
9640557818



समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>